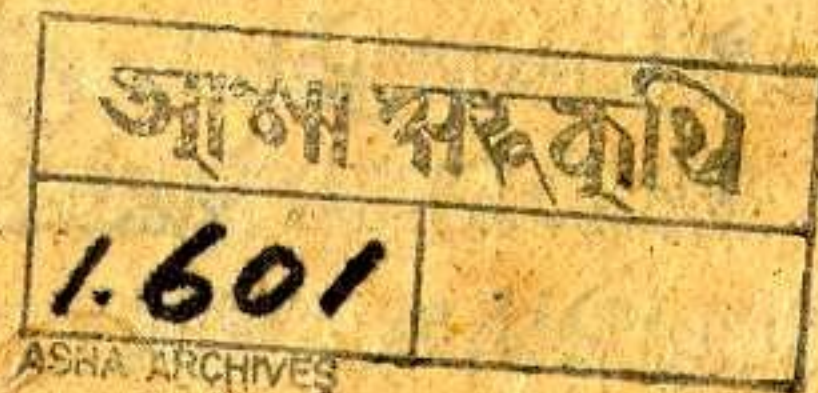




आकाकनाहडागधनुरं वक्तुम् ॥ ८ ॥ उ० काहाहानानवरगसकृत्सिंहाहकदादहासं कृताशु ॥ दण्डय
 द्यस्यसतस्यवन्तहा नूलग्नं रवनस्य चार्द्धम् ॥ ९ ॥ गमजाविकर्किमिथुनासमृग्गनिहभखा ॥ १० ॥ दयावि
 मिथुनाकथितासुत्रवाहीषदियादिनवलाधुरकिहावालनसमत्युरयत ॥ ११ ॥ धुनामयुग्मं ॥ १२ ॥ कुन ॥
 सोम्या ॥ यनूषवनितागवना ॥ गद्विदहा ॥ प्रभादीहा ॥ क्रियवृषयुक्कर्कया ॥ सगिकाहा ॥ शामार्क ॥ दुन्दानय
 त्रिसमर्यदुराचा ॥ हान ॥ दुकाहा ॥ १३ ॥ सूरवनस ॥ गणिकाहा ॥ धियानां ॥ १४ ॥ कचिनुहानां प्रथमाम् ॥ यस्य
 वीरुनिलारुधियगाद्वितीयां ॥ उकाहासं कृमपिवधुयनिस्रदायलोकादहा नधियानां ॥ १५ ॥ अजवृषर

मृगगनीकलीनामषवनिगीचदिवाकनादि दुंग ॥ १६ ॥ दहाहिविमनूकृतिथीन्द्रियाहोमिनवकविंहातिरि
 धुग ॥ १७ ॥ वरुगर्कमाधुनगृहादिषूयूर्वमध्ययकत ॥ १८ ॥ गुरुहलानवरगसं ॥ १९ ॥ सिंहावृषयथ
 मषरुयांगोलीकृष्णिकाहा ॥ रवनानिरुवकिसूर्या ॥ २० ॥ हानादयसनुकद्वन्मसहात्कर्वधू ॥ युगा
 त्रियत्रिमन ॥ निगुरास्यदाया ॥ निष्कारुमिष्ययचयान् ॥ २१ ॥ विकर्मलारुद्विषसं कृतागृहाहिननित्यम
 क ॥ २२ ॥ कल्पस्वविक्रमगृहप्रतिरुदगानिचिरुत्तुगुनमानवरुययानिलगमाद्विदुर्थनिधनचतुनप्रसं
 ॥ २३ ॥ सयमगृहदहामं वमा ॥ २४ ॥ कंटककन्दचतुष्टयसं ॥ २५ ॥ सफमलग्नचतुर्थस्वरुनां ॥ २६ ॥ गयुयथा

विहितमूवलाद्याः कीटननाम्बचनाय हावद्य ॥ १० ॥ कन्दाल्यनयनरुलंयनगद्यसर्वमाथाकिर्महिबुक
 मम्बमूर्खवचवम्भायामिगमसुरवर्नसुगरंरिकादीमम्बनर्दहाममगचकर्मविद्या ॥ ११ ॥ कानास्वामिगुनू
 वीक्षितयूगानाश्चैधुवीथाल्किटाः कन्दस्माद्वियदादयाश्चिनिहिचय्यकचर्ययाद्वय। यवर्द्धिविषयाय
 यः कृतागुणमानयगीर्यचयूद्विर्कसुरुजनयधुनवर्मगाड्यंरिकाहाश्चगत् ॥ १२ ॥ नकः ४ वरः ४ सकत
 नूनिरः ४ पाटलाधूसयाधुविगः ४ कृष्णः ४ कनकसदहाः ४ र्पगलः ४ कर्चनधु ॥ वरः ४ स्वः ४ प्रथमरवनाद्यम्ववर्
 ४ लवर्त्तस्वाम्याहास्वीदिनकनयूगाहाद्विगीर्यचवधि ॥ २० ॥ ॥ र्गिधीधीमदवगिकाचार्यधीवनारुमिदि

नकुगोदहकागकनाहियरदायायावथमः ॥ १ ॥ अथग्रहथानिरुदमारु ॥ ॥ कालात्मादिनकनमनसुहि
 नगुः सत्त्वकउक्तागिनाजीवाङ्गानसुखसितधुमदनाहः र्वदिनहात्मजः ॥ नाजानोनविहीतगूद्वितिसूगानताक
 मानावधः सुनिर्दानवपूजिताधुनवित्रोयस्यसहर्षांशुजः ॥ १ ॥ हलिः सूर्यधुन्दमाहीतलक्ष्मिहन्नाविगुकावाध
 नधुन्दयूगः ॥ आनावकः ४ कृनहकवावनयः ४ कोऽहामन्दः ४ सूर्ययूगाश्चित्तधु ॥ २ ॥ जीवाजिनाः ४ सनगुनूर्वचर्या
 यतीमोऽशुकारुगुर्गुसुतः ४ सितं आसुजिञ्च ॥ नाहसमागुनसुनधुहिर्वातिकहः ४ पर्यायमन्यदयलस्यदञ्च
 लाकार ॥ नकः ४ माहास्वनागोनन्दनारुचांगानकगोनधुवकः ४ दूर्वाध्यामाङ्गागुनूर्वजानगायः ४ ग्रामः ४ शुर्क

रासुनिःकृदुदह॥ ७ ॥ वर्धुस्मासुसिगातिनकरुनितयायीतविगासितावर्द्धवमिऊकहावल्हविका॥ सु
 योदिनाथा॥ ८ ॥ कामा॥ ९ ॥ यगा॥ १० ॥ यानविशुक्लाहिरुतम॥ सोयन्दुवित्पुनय॥ कीर्णवर्कमहीसुगार्कतनया॥
 यायाबुधस्युत॥ ११ ॥ बुधस्यसुगोतनयुंकास्थोहाहि शुकोयुवतिननायु॥ १२ ॥ निविरुखवयथामनूज
 धानावहिनासुमिसुतादय॥ १३ ॥ ॥ विद्यादित॥ १४ ॥ युक्कयुक्कगोका॥ १५ ॥ वधीवध॥ १६ ॥ ययसिगाननना॥ १७ ॥ चकार
 जीवाकृतिगोका॥ १८ ॥ यथाकर्मसत्त्वनजसमांसि॥ १९ ॥ मधुयिगलद्वचउनसतन॥ २० ॥ यिरुयदति॥ २१ ॥ ताल्यकच
 ॥ तनूरुतनूरुवज्जवातकरु॥ २२ ॥ पाकृष्टगहीमृदवागुरुदक॥ २३ ॥ कुनदकतनूरुमृदिनूदान॥ २४ ॥ येरिक॥ २५ ॥ युव

४

यल॥ २६ ॥ मध॥ २७ ॥ शिष्टवाकहाततलास्यनूचिर्ह॥ २८ ॥ यिरुमानतकरु॥ २९ ॥ युक्ति॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ रुदरुतनूरुयिगल
 मूर्धुजक॥ ३२ ॥ रुदस्यति॥ ३३ ॥ यष्टमति॥ ३४ ॥ करुतामक॥ ३५ ॥ रुगु॥ ३६ ॥ सुखीकान्नवय॥ ३७ ॥ सुलावन॥ ३८ ॥ करुनिलात्मासि
 तवकुमूर्धुज॥ ३९ ॥ १० ॥ मदालस॥ ४० ॥ यिलदक॥ ४१ ॥ दीर्घगा॥ ४२ ॥ सुलद्विज॥ ४३ ॥ यनूयनामकयानिलात्मा॥ ४४ ॥ स्त्रा
 म्ब॥ ४५ ॥ कृत्वगथशुकवसत्रमूजामया॥ ४६ ॥ वधुवधुशुकमत्रजहोमा॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ दवांविगिदिकमका
 हासयनदियुक्तना॥ ४९ ॥ कामातवर्द्धसुलमशुकममिकरुतंमदरुंरुटितं॥ ५० ॥ तामुस्यामनिरुमयूकिन
 उताम्य॥ ५१ ॥ कृताशुमूकायसीयुक्ता॥ ५२ ॥ निहिनाय॥ ५३ ॥ शुकवर्द्धसुलममिकरुतंमदरुंरुटितं॥ ५४ ॥ तामुस्यामनिरुमयूकिन

नसंस्मृत्युचितवीर्ययुताः यत्रिकल्या ॥ २० ॥ निहिताहिकुसुमाः सर्वदाहिक्रियायावकुलसितगताः
स्यः कुत्रसोम्याः कुमलाद्ययत्रदिवसहानामासुरोऽकालवीर्यहानूवृगुधुवनायावृद्धितावीर्यवतः ॥
॥ २१ ॥ ४१ ॥ ॥ तिथीधीमदवतिकात्रार्यत्रयधीवनाहमिहिनवित्रचितकुरुजातकग्रहयानिरुदाध्या
याद्वितीयः ॥ ॥ अथविद्यानिजन्माह ॥ कुत्रग्रहेऽसुवलिरिर्विवलेषुसोम्योऽकीवचरुष्यगतातदवद
भावाः त्रययगद्वित्रसहागसमाननूयंसत्वंवयद्यदितवत्सविद्यानिसंह ॥ १ ॥ यायावसिनः स्वरु
गगमः यानश्चविवलाष्ट्रभातना ॥ लग्नं वविद्यानिसंहकंदृष्टाजयिविद्यानिमादिषात् ॥ २ ॥ क्रियः शिवा

वकुगलरुजायायादां हकंयष्टमनाऽथयार्ष ॥ कृशीत्वयानांयाथमदमूकोस्मि कयूकमित्याहवउया
दांम ॥ ३ ॥ लग्नांकातग्रहयागदभावावधुनवयदलयकादियानोदृष्टासमानंयवयचसंस्वया
लखावयतस्मनसंस्वेष्टयष्ट ॥ ४ ॥ स्वगदकाहवल्संयुततवाग्रुनयूकवत्रलांकादय ॥ वृक्षांकां
वाविरुगासुलाम्बजाः ॥ ५ ॥ नेष्ट्रनदीक्षयागमंरुवा ॥ ६ ॥ हात्रन्यूत्रिप्रविरिर्विवलेस्तनूलांतायसुल
तनूरुवांकादत ॥ ७ ॥ यरुदः लग्नमद्रुसुलजलर्कयतिमुयावांतावकएवतनवसुलतायजाता ॥ ८ ॥
अंतःसात्रानूजनयतित्रविदूरगमसूर्यसूनुः ॥ ९ ॥ क्षीनायतांउरिनकित्रहः कषकाद्याष्टमीम ॥ १० ॥ वागीह

लग्नद्वानिधनाग्रितकृज। वंधंस्त्रगयाः कृजार्कयाः क्रीर्णो निधनाय पूर्ववत् ॥ ८ ॥ उदयास्तगयाः कृजार्क
 या निधनं हस्तकृतं वधरुथमासाधियतो निधातिरक्तकालं वधं समादिहते ॥ ९ ॥ हस्तं कलाम् यगते
 धुरगृहे मिको हजायार्थस्त्रास्यदस्मिन्ने ॥ रुतीयलानि गते ध्रुवाय के ॥ सुखी रुगर्हा न विष्मिन्नी दि
 त ॥ १० ॥ उज्ज्वले ॥ यूनर्षां कषूवलिरिल्लगार्कगुर्विचरि ॥ यं ऊनप्रवदत्सर्मां हकगते यूरम्भूते या
 धित ॥ गुर्वर्को विषमनर्षां हिसिती वकष्ययूरम्भूतिर्यं गस्तवधवीरुक्षेत्रमलो कर्वेनियदेस्व
 क ॥ ११ ॥ विहाय लग्नं विषमर्कसंस्तु ॥ सोनायियूं ऊनकना विलग्नान् ॥ अकग्रहाण मवला अवीर्यवा

८

अ॥ यस्तु तो यूनर्षां गता वा ॥ १२ ॥ अन्धान्याय दियधत ॥ हस्तिनवीयद्या किं सोम्या वयिवका वा समर्ग
 दिनहमममचन्द्राय यो यतस्मिन्ने ॥ यूरम्भूते कृगता वयिन्दु हस्तिनो हस्त्यात्मऊनद्विती यूरगा गसित
 लग्नहीतकि नक्ष ॥ स्त्र ॥ क्री वयोग ॥ स्मृता ॥ १३ ॥ यूरम्भूते सिती नथो ऊरुवनस्य ॥ हस्तजीवा दयालुर्ग
 दून निनी द्विती वसमगे यूरम्भूते वा पाणिन ॥ कर्षूस्मिथूनं रुहा दयगता ॥ द्युग्मां हकान्यधति स्त्रां हस्त
 धितर्षूग्मां हवक्ष्मन्मिलि ॥ समं ॥ १४ ॥ धनूर्ध्वनस्यां गत विलग्नगृहे स्तुर्दक्षयगते वलस्ते
 ॥ वक्षार्किं वीर्ययूत नदृष्टं सीति पुरुता श्रुयिकां सस्तु ॥ १५ ॥ कललद्यनं कृनास्ति चर्मा गजवत

१५

नतान॥ सिरकृजजीवसूर्यत्र्यंकार्कवृक्ष॥ यनत॥ उदययत्रयसूर्यनाथ॥ कम॥ गदिगारवति
धुराधुरं नमासाधियत॥ सदृशं ॥ १४ ॥ शिकाहागहविवलेस्ततायनेमूर्वाधिहस्तदिगुहास्तदारुव
त॥ अवाग्नविंदावधुरेहसुधिलो॥ धुरादित॥ अत्कनूतगिर्नचिनात॥ १५ ॥ सोम्यर्का॥ नविजुनधिने
अत्तयका॥ ज॥ क॥ कु॥ स्वर्क॥ धिनिनन॥ ग॥ म॥ न॥ मा॥ हो॥ म॥ रु॥ य॥ द॥ ॥ १६ ॥ यं॥ गु॥ मी॥ न॥ य॥ म॥ धि॥ क॥ डे॥ वी॥ दि
त॥ ल॥ ग॥ र्म॥ स॥ स॥ र्म॥ यो॥ यो॥ धि॥ नि॥ व॥ उ॥ उ॥ ॥ न्या॥ न॥ व॥ लो॥ म्य॥ द॥ धि॥ मो॥ न॥ धि॥ क॥ दि॥ वा॥ क॥ न॥ द॥ ॥ वाम॥ न॥ का॥ म॥ क॥ र्म
ह्यविलग्न॥ धी॥ न॥ व॥ मा॥ द॥ य॥ गे॥ य॥ द॥ का॥ ले॥ या॥ य॥ य॥ त॥ न॥ उ॥ जं॥ धि॥ नि॥ न॥ ॥ १७ ॥ न॥ वि॥ धि॥ नि॥ य॥ त॥ सि॥ र्म

ल॥ ग॥ क॥ ज॥ क॥ नि॥ त्रि॥ दि॥ न॥ न॥ य॥ न॥ न॥ दि॥ त॥ ॥ सो॥ म्य॥ सो॥ म्यो॥ ॥ स॥ व॥ दू॥ द॥ ला॥ च॥ न॥ ॥ य॥ य॥ ग॥ र्म॥ ग॥ त॥ ध्र॥ वा॥ वामं॥ दि॥ न॥ र्म
य॥ न॥ न॥ वि॥ न॥ धुर॥ रु॥ ल॥ दा॥ या॥ ग॥ म॥ या॥ या॥ ह॥ व॥ मि॥ धुर॥ दि॥ ता॥ ॥ २० ॥ त॥ का॥ ल॥ मि॥ न॥ स॥ दि॥ ता॥ दि॥ न॥ स॥ र्म॥ का॥ य॥ स॥
उ॥ ल्य॥ न॥ धि॥ स॥ दि॥ त॥ य॥ न॥ त॥ ॥ धि॥ क॥ या॥ वा॥ न॥ द॥ ति॥ दि॥ न॥ त्रि॥ स॥ मा॥ न॥ रा॥ ग॥ स्ता॥ व॥ ग॥ त॥ दि॥ न॥ नि॥ ॥ ॥ य॥ व॥ ति॥ उ॥
न॥ ॥ २१ ॥ उ॥ द॥ य॥ ति॥ मृ॥ दू॥ र्म॥ ॥ स॥ क॥ म॥ स॥ व॥ म॥ न॥ य॥ दि॥ रु॥ व॥ ति॥ नि॥ य॥ क॥ ॥ स॥ ति॥ न॥ द॥ सु॥ य॥ ल॥ ॥ धि॥ नि॥ उ॥ वि॥ धि॥
न॥ ध॥ द॥ य॥ ध॥ य॥ क॥ र्म॥ ति॥ ग॥ दि॥ त॥ मि॥ रु॥ य॥ ला॥ ल॥ स॥ ति॥ का॥ ल॥ वि॥ चि॥ र्म॥ ॥ २२ ॥ ॥ ति॥ धी॥ धी॥ म॥ द॥ व॥ ति॥ का॥ वा
र्य॥ व॥ र्य॥ धी॥ व॥ ना॥ रु॥ मि॥ दि॥ न॥ न॥ वि॥ चि॥ न॥ रु॥ ज्ञा॥ त॥ क॥ नि॥ य॥ का॥ ध्या॥ य॥ य॥ ॥ १० ॥ अ॥ ध॥ स॥ ति॥ का॥ ध्या॥ य॥ ॥ ॥

चिउर्जातः यत्राक्षलममिद्यावयधतिविद्यहस्तस्यत्रगमव्याकृतदिवकन॥ १॥ उदयस्तुपि
वामभ्यकुञ्जवास्तुसमागतः॥ स्थितवानर्द्धयानाथः॥ २॥ गङ्गांकयायलमवावृ
ष्टिकसगिरागगोः॥ गुरुः॥ स्वायस्तुतेर्जातः॥ सूर्यस्तद्विज्ञापिव॥ ३॥ अथयदगततानोऽष्टवीर्यस
मन्वितेः॥ दितनूक्तेष्टयमलोरवतः॥ काष्ठवष्टितो॥ ४॥ अगस्त्यरुच्यलमगस्त्यमोत्रथवाकुञ्जवा
स्तुदः॥ गङ्गागुजायतनालवष्टितः॥ ५॥ नलग्नमिद्वं वगुर्निनीदितनूवागङ्गांकं न विष्णुसमागतं
सयायकार्कः॥ यनेथवागङ्गायगङ्गागतं यवदनिनिष्ठयान्॥ ६॥ कनर्द्धगतावधारतोसूर्यगुणननवा

त्रजस्तुतोऽवद्वसुयिताविद्यहगः सुत्रा नातिवक्ष्यदधायथि॥ १॥ यूरुर्हृदिनिम्बनातिगसोभ्यलम्ब
 गतहुरसुखेऽलम्बजलजस्तुगतिवाचयद्यतगताप्रसूयत॥ ८॥ आथादयमाथगः हृदि सूर्यसु
 तद्वतथावाऽमसूत्रवंधूलम्बगः स्यात्सूतिः हृदिलिलनर्महयः॥ २॥ उदयादयथाव्ययसूतिगुह्यां वा
 यनिनीद्वितयममसूलिकर्कियुतविलम्बगसोत्रहृदिकर्कितवट॥ १०॥ मद्यकगतविलम्बगवृधसूत्र
 द्यनिनीद्वितकमात्॥ कीजगुवनसूत्रालयप्रवदकर्मत्रसायत्रावमो॥ ११॥ नृलम्बगर्हृदितिकः हृदमहनेत्र
 प्रसितद्वगुत्रग्निरुगुनविनत्रद्यामत्रगकलषु हिल्यालयेरुः हृदवर्कनाति॥ १२॥ नाहर्हममानम्बवने

मा (मर्ज) उ न्नत्र प्रस्मिन् गृह स्वर्क्षा ण गगे स्वमन्दित्र वलथा गत रुतमण कर्कया ॥ १३ ॥ आ नार्क उ या म्बिका
 ण गत्र ये स्रत्र विष्टु यत मय्या ॥ दृष्टमत्र ना उ मं विष्ठा दी र्घाय ॥ स्रख वां श्रम ॥ स्मृत ॥ १४ ॥ या य द्दि त रु दि
 न गम वृ द य कृ उ स्रख का विन श्र ति कृ उ कर्क या स्रथ य ॥ सो म्य यि य श्र ति थ वि ध रु स्र म ति सो म्य त न य य न
 रु स्र ग ता य ना य ॥ १५ ॥ यि रु मा रु गृ हे य त द ला रु नृ ण ला दि यू नी च गो ॥ धु रु ॥ य दि ने क ग ते सु वा दि गो ल
 (मं दू वि उ न य स्र य त ॥ १६ ॥ म न्य द्वा ण ण नि रि वु क म न्य दृ ष्ट कु ग वा त द्र क वा त म सि ण य न नी च र्म स्र
 ध रु मो । य द्वा णि वृ उ ति रु ति उं ग र्म मा द्र सु त द त्या ये ध रु स्र न स्र ख ग ते कृ ण मा दू र्ज न न्या ॥ १७ ॥

१५

स्र रु ॥ ण ण का इ द या च व र्दि दी पा क्क य क र्क व सा च ना य ॥ द्वा न च त द्वा मु नि क न्यं स्र रु यं गृ हे वी र्थ स म न्दि
 ता द्वा ॥ १८ ॥ जी र्णु स्र रु त म क्क उ दि ति स्र त द र्घं न वं णी त गो का द्वा चं न द रं न वी णि स्र त त ने क णि ल्य रु तं
 न म्यं चि त्र य तं न वं च रु गु उ जी च द रं म न्दि त्र च क र्के ध य (अ य द ण न च नां सा म रु यूर्वा च द त ॥ १९ ॥ म य
 कू ली न उ ला लि य ट ॥ या गुरु त ता गु नृ सो म्य गृ रु म् । य धि म त द्र द्र ण नि वा सा द दि ण रा ग के त्रो गृ ग र्मि
 हो ॥ २० ॥ या द्वा दि गृ रु क्रि या द या द्वा द्वा का ण ग ता दि मूर्क य ॥ ण र्था स्व यि वा मु न द र्क त्या द ॥ अ दृ णि न र्वा र्थ
 स्रि स्मि ते ॥ २१ ॥ ल म च द्वा क न ग ते गृ रु ॥ स्र नृ य स्र ति का ॥ व रि न रु न ध का द्वा द्वा द्वा द्वा न्वा य न ॥ २२ ॥

लग्ननवांघायतुल्यतनुः स्याद्यीर्ययुतगुरुतुल्यवयुर्वा। चन्द्रसमननवांघायवर्धुः कादिविलग्नविरुक्तरग
 १॥ २३ ॥ मूर्तिकाप्रकननम् ॥ कंदक (६) नसाकयालरुनवावर्क चरुनादयस्ककर्मकाकनाकुपाध्वदद
 यकाठकेनारिस्त ॥ वस्तिः निम्नगुदतनश्च वस्त्वृत्तताजान्नीर्ज्यांश्चिरुत्तयप्रवाममूर्दितेर्दृक्कागता
 (गोमिध) ॥ २१ ॥ तस्मिन् याययुतवृक्षः धुरुयुतदृष्टचलश्चादि (६) तस्वर्का (६) स्त्रसंयुतयुसहजः स्यादना
 थगनुका ॥ मंदस्मानिलजाग्रिहास्तुविषजाहोमवृधरुहवः सूर्यकाष्ठवृक्षयदनरिम (गोमृं) मृकुजानो धु
 रं ॥ २४ ॥ समनूयतितायस्मिन्नागगुयः सवृक्षग्रहानवतिनियमात्तस्यावायिः धुरुश्च धुरुयिवायुन

१२

कृधुरुः सृष्टयदुतनोरसमाधिततिलकमसहृष्टः सोम्ययुतधमलश्चवान् ॥ २६ ॥ २२ ॥ निष्प्रीष्टामदवति
 काचार्यवर्यधीवनाहमिहिनविनचितरुजातकजन्मविधिर्नामाध्यायः यं चमः ॥ ॥ अथश्रुतिश्रुत्याय ॥
 संख्यां हि मदीधितिरानायायेताकमानेनिधनाय प्रत्येकं णिवायसमनेर्यः कन्देः सविनाहामयेति ॥ १ ॥
 अकस्यपूर्वतनरागागयूकनयुसोमयूडकीटलग्नः किप्रं प्रनाहं समूयेतिजातः यायेर्विलग्नसामयाहिर
 १॥ २ ॥ यायावृदयास्तगतो कननयुतधृष्टाणी नृष्टधृष्टधुरुर्नयदामृष्टधुरुवदचिनात् ॥ ३ ॥ श्री (६) हिममे
 यय (गयाये) नृदयाष्टम (गो) ॥ कन्दुधुरुर्नयनयद्विर्धुनिधनं यवदत् ॥ ३ ॥ कनसंयुतः (६) णिस्मर्तायमृष्ट

ललग्नगणकंठकात्वरुः १६ गुरुनेत्रदीक्षितश्चमृत्पुत्रः ॥ ८ ॥ गणिनीलीविनाशगनिधनमाधुयायेद्विगतगुरुनेत्र
 समाश्रयकंदलमगंधमिष्टेति ॥ असहित्रवलाकितवलिरिन्नगमासंधुर्लंकलसहित्रवयायविद्वितवि
 लग्नाधिय ॥ ८ ॥ लग्नदीर्घगणिनिनिधनं नंधकचूपाये ॥ यायाकस्तुनिधनरुिवक्यनयूकचचच ॥ ९ ॥
 लग्नरुवतिमदनः १६ रुद्रसंस्तुययायमागसाईयदिवनगुरुनेत्रदीक्षितः १६ किरुहि ॥ १ ॥ नाथंतागसहि
 त्रवीक्षमा १६ चन्द्रशिकलायमतेययाये ॥ यासेययायागुणिगुर्विथागसस्तुययायेसुदिनां गुलाग्र ॥ ८ ॥
 अगुरुसहित्रगुरुचन्द्रकूटनिधनाग्रिगुननिसूतयामृत्पुत्रलग्नत्रयोदसहस्तु ॥ उदयतित्रयोहीता

१६ वाशिकालविनाशगेनिधनमगुरुनेत्रदीर्घायते १६ गुरुनेत्रदीक्षित ॥ २ ॥ असितत्रविगणकंमिजेययनव
 मोदयनेधनाग्रिते १६ रुवतिमत्रलमाधुयहिनांयदिवलिनागुनूतनदीक्षिता ॥ १० ॥ सूतयननवांखलमनंधु
 गुरुयूतामत्रभायहीतनभि ॥ रुगुसूतगणिपूगदवयूयेयदिवलिरिन्नयूतावलाकितावा ॥ ११ ॥ यागस्तु
 नगतवतिवलिनधुचस्ववातनूगुरुमथवायायेदृष्टवलवतिमनर्षवर्षस्याकः १६ किलमूनिगदिता ॥ १२ ॥
 ०० तिष्टीष्टीमदवीतिकाचार्यवर्यष्टीवनाहमिरिन्नविन्नवितरुजातकअनिष्टाधायषष्टम ॥ १०३ ॥ ॥
 अथआयूय ॥ ॥ मययवनमनिरुहाकिपूवेदिवससकनादिषूवत्सना १६ प्रदिष्टा १६ नवतिथिविषय

78

धुनः स्मृतं छागयीनां दलकसहितं षड्वयं ॥ १ ॥ अनिमिषयुनमांशके विलम्बेन गतं यगवियं च व
 र्जलिकः रुवति हियं न मायूषः प्रमार्जयति स हिताः सकलाः स्वर्गं गच्छन् ॥ ६ ॥ आयूर्धातुं विष्णुमुपाधिवेव
 दवस्वामी सिद्धमनश्चक्रः दायः शेषां जायते ऽष्टावनिष्टं हित्वा नायुर्विहातः स्यादधस्तात् ॥ १ ॥ यस्मिंश्चांग
 पूर्णमायूः प्रदिष्टं तस्मिंश्चाकं चक्रवर्त्तित्वमभ्यः ॥ पृथक्कायं तेषूदासाय नापि जीवंत्यायूः पूर्णमर्थे विनापि ॥ ८ ॥
 स्वमतं न किलारुजीवन्मांशं रुदायं यत्र मायूषः स्वनांशं ग्रहणं कृतं नार्वांशं नातिहृत्यं वदुःसाम्यं समयेति
 सत्यवार्थः ॥ २ ॥ सत्यां कग्रहमिष्टं लिङ्गीकृत्वा हातद्वयनायः मधुललागविधुद्धदाः स्थः ॥ १६ ॥ वाचमासाद्या ॥ १० ॥

स्वर्गवक्रागतेस्तिर्मगुलदिनूरुमस्वांलकरुगिरागो॥१॥॥यात्रविषमसुतदकलाभितसमानमशत्य
 थमस्यदीनिर्गं॥११॥॥किल्लुगुलंषयतिमंददातिवीर्यान्वितानाहिसमंवराना।कुनादयथायवयःसनायकार्यं
 चनाद्येःप्रथमायदिष्टे॥१२॥॥सत्यायदःभवन्नमगुकिंउकृर्वतयाग्यंवदुवर्गमसि॥॥आचार्यकंत्वगुवदुघ्नत
 यामकउयदूनिगदवकार्यं॥१३॥॥गुनूहसिहरितकलीनलप्रहसितनयहगुऊवकद्वयातकवत्रियूसरु
 जायगेध्रलेषेनमितमिरायूननूकमादिनास्या॥१४॥॥१५॥॥तिष्ठीमीमयवतिकाचार्यवर्यधीवनारुमिदि
 नविनचितकृदजातकश्रायूद्दयःसकम॥॥अथदक्षाननाध्यायः॥॥उदयनविषमंकयालिकडा

हिमंस्वाःप्रथमवयसिमध्वंतचयशूरुलानि।नहिनरुलविद्याकःकद्वसंस्वायरावरुवतिहिरुलार्थ
 किःपूर्वमायाकिमयि॥१॥॥आयूःकृतंयनहियरुदवकल्यादक्षसायवलस्यपूर्व।साम्यवदूनविदुवर्म
 दस्यतयाउसाम्यप्रथमादितस्या॥२॥॥उकृर्दगुदुमयदस्यददातिल्वंस्वर्गंषिकालगृहगःस्मृजगःस्व
 नां।यादरुलस्यचउनसुगतःसहानास्तेवयनस्यनगताःयत्रियाचर्यति॥३॥॥स्मृनायथेतानिम
 वलुयित्वासर्वधधदविवर्जितानि।दक्षधयि।गुगुलकायथा।कृदस्यदेकनदक्षप्ररुद॥४॥॥
 सम्यग्वलिनःस्वर्गगगगसंयुक्तुवलवर्जितधनिका।नीचांमगतस्येकगुलागहूयानिष्टरुलाद

क्षप्रसूतो ॥ ४ ॥ उद्यम्य उंगद वनादि संलाम्भारवत्मा सुदुश्चला ॥ ग ॥ आनादिनी निम्रय निश्च तस्मिनी
 वानिरा ॥ ५ ॥ अथ धमा रवत्मा ॥ ६ ॥ नीवानि रं ॥ ६ ॥ समवस्थित वल्लभ गुरुमिष्ट रुला यद्विष्टा ॥ स हान
 नूयानि रुला न्यायेषां दक्ष सुवस्त्रा मिष्ट रुला यथा ग ॥ ७ ॥ उरया धममध्वयुजिता दक्षालेष्ट नर सुव
 कुमार ॥ ८ ॥ सुकुसुमा ॥ ९ ॥ स्मिन्नकुमा द्वा नाया ॥ १० ॥ यत्रिकलित दग्ध ॥ ११ ॥ ८ ॥ एकैद्यो न व विंशति द्वितीया
 वासवर्मा कुमा चंद्रा ननु ज धु क जीव दि न द्वा क नीलं समा ॥ १२ ॥ स्वे ॥ स्वे यूरु रुला निमर्ज निते ॥ १३ ॥ कि दक्ष
 या ॥ १४ ॥ कुमा द नु लग्न दक्ष गुरु तिय वना ननु कि क विरुथा ॥ १५ ॥ या कस्वामि निल गंगे सुद दिवा वर्जस्य ॥

१०

९

सोम्य विवाया नवा गुरु दक्ष प्रिदक्ष मरु लार सुवा या कथ मिष्टा चय चय त्रिकोण मदन या कध्व नस्य स्थित
 ध्वन्य ॥ १६ ॥ सरु लवाना निक नूत या या निवाता न्याथा ॥ १७ ॥ या नवादि म ॥ १८ ॥ दक्ष सुगुरु ॥ १९ ॥ सो र्वार्थ माना वरु
 को ज दूषयति क्रियं वध गुरु विद्या सुद दिलादा ॥ २० ॥ इमा नव्य यथालय धिक नी सिंरु सित र्द नदा कृ प्रिदा मृ ग
 क मया गु नू गुरु मानार्थ सो र्वार्थ वरु ॥ २१ ॥ सो र्वार्थ नव दंत वर्म क न क को र्वार्थ धरु या रु वे स्ते द्वा ॥ २२ ॥ सो र्वार्थ मज्ज
 मुद्य म न ति ॥ २३ ॥ ति ॥ २४ ॥ प्र ता या न ति ॥ २५ ॥ रा र्था य प्र ध ना नि ॥ २६ ॥ कु कु त नु गू या रु वा या य द ॥ २७ ॥ ग ॥ या य न ति ॥ २८ ॥ रु रु
 क ल द्वा ॥ २९ ॥ उ यी उ म या ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ प्रा य द क्ष लारु निल रत मं गी दि जा र्थ रु वानी इ की न त्रि का न व रु कृ धु

何

वयः प्रीतिश्च सह मित्रेऽसुखादा गहनाकुमः प्रवक्ष्यामि न विधर्मा धिति ॥ १० ॥ लोकांगीत न ति प्रमोद सु न रि
 द्रव्या न याना म्ब न की न त्र द्यु ति म न्म (थ य क न ल क्ल न द्यु मि ग ग ता ॥ को ण ल्य क य वि क यं वि नि धि प्रा कि दु न स्या
 ग मा रु द्वा र्वा ण नि षां द ध र्म न रि ते वे र्मं शु च १ स्त्र रु त ॥ ११ ॥ सो त्रीं प्रा य ख नो द्यु य कि म रि षी रु द्वा र्वा ग ना वा क य १
 (ध र्म ग्रा म यू नो धि का न उ नि ता १ यू जा १ कू धा न्या ग म ॥ (ध र्म व्या नि ल का य मा रु म लि न द्या य रि र्ग डी ण मा रु स्या य रु
 क ल शु र त्वा न म यि या प्रा ति च र्यं ग तां ॥ १८ ॥ द षा स ह का स धु रानि कूर्व न्य नि ष्ट सं ह स धु रानि वे र्म मि धा स मि धा
 नि द षा रु ला र्वा नि त्रा रु लं ल ग्न य त १ स मा र्ग ॥ १९ ॥ र्म ह्वा य य स्या य द्यु य मूर्कं क र्मा जी वा य ध्रु य स्या य नि ष्ट र ता न रु

नालाकयागमहवंचनरुसर्वकस्यार्थदक्षयां ॥ २० ॥ कृत्यामहाहृतकतां वसुधैविचयं तिस्रदक्षमवाय ॥ कं
 वमिवायुमत्रजानगुणधनारुस्यदकलकुवत्तानुमयां ॥ २१ ॥ धुतुरुलददक्षयातादकवाकनात्मावदुजतय
 तियंसांसोखमर्थगमध ॥ कथितरुलवियाकेरुर्कयतवर्तमानां यत्रिषमतिरुलाकिः स्वयविनास्ववीर्ये ॥ २२ ॥
 एकग्रहस्यसद ॥ हरुलयाविना ॥ धनार्णवययदधिकं यत्रियर्चतत ॥ नान्याग्रहः सदक्षमन्यरुर्लकिनाकिस्वा
 र्थादक्षमूयगतः स्वरुलप्रदाः ॥ २३ ॥ ॥ तिष्ठीधामवदंनिकोवायवर्चधीवनारुमिदिनविवन ॥
 हरुजागकदक्षनर्दक्षायः ॥ २४ ॥ ॥ स्वदकप्रथमायवधूनिध

१८

नद्याहृतयाशूनगवकास्त्रादिवतददवनविजाकुकात्मनां तानिषु जीवाद्धर्मसमायः ॥ कृषदक्षार्य
 त्रिगः ॥ १ ॥ तन्मातृषुद्विदक्षायगः सधनधीधर्मेषुवार्न
 कृष्णास्वासास्त्रादिषुसाष्टसकसूनवषडाथधीस्त्रायमाः ॥ धीशायामकंठकषुउवधकीवाद्धनायाष्टगः ॥ क
 न्यमृधिसितानुधर्मसुखधीशायामदागगः ॥ २ ॥ वकाहूयत्रयश्चितासतनयथायाधिकषूदयाच्युद्वि
 मिरुलमूकन्यनिधनयाश्वार्थगः ॥ स्वाहू ॥ धर्मायाष्टमकंठ ॥ गार्कतनयातूलातषुधिधीलारगः ॥ धुकाह
 वयलारमृषुषुगुनाः ॥ कर्माहलारानिषु ॥ ३ ॥ द्यायायाष्टतयः ॥ सुखमूरुगुजासशात्मजर्षिइउः ॥ साहू

वलसाहस्येऽकृजांलसोम्यांललियिगलितदि कायलिल्ये॥ २ ॥ जीवांलद्विजविवृधाकनादिधर्मकायांलम
 लिवजतादिगलललाये॥ सोर्वांलधमधरावनीवलिल्येऽकर्मसाधयितनवांलकर्मसिद्धि॥ ३ ॥ मिगानि
 स्वगृहगतस्तस्ततांलसुं गसुवल्लिनिवलास्तववीर्यात। आयसुवृदयधनाग्रितेधुसोम्येऽस्यिंर्यवलन
 हितेननकभल्ल॥ ४ ॥ १५३ ॥ ॥ तिथीधामदवतिकाचार्यवर्यधीवनाहमिहिविवनचितकृजातकक
 र्मजीवाधायदहम॥ ॥ नौजयोगअथ॥ ॥ प्रादुर्धमनाऽस्वर्गगोऽकृतेऽकृममतिर्महीयति॥ कृते
 मुनजीवधर्मलऽयकृद्विषयऽयजायत॥ ॥ वकाकाकाकागुनूरिऽयकलेक्रिश्चिथ्याअधुषाउतृयाऽ

कथितेकलमनधकाग्रितेषुवतदकतमविलुमस्वादगमललिनियाउयहसुमियाऽस्य॥ २ ॥ व(र्म)रु
 मगतलमस्वचुवाचदवजिते॥ वहुनायेग्रहदृष्टनृयादाविषगिऽस्मृता॥ ३ ॥ यमकृकृकृकृकृगविषगि
 नितेप्रवतनगोनृयकसिंहलिल्येऽललजगुनूवकेनृयतय॥ यमनृगुगमयविरुललजोषसुवतनृला
 ऊनृदृगोऽसिगकृऊजीवेधननृयो॥ ७ ॥ कृऊर्गार्कचाद्वनृषियमलमस्वचयनिऽयतिर्हमधन्यऽकि
 निसूतविलमसललिनिसर्वडयोप्रसूनयतिगुनोवायधनगस्वर्गगुलानावृदयमृययातद्वितियति
 ॥ ८ ॥ वृषमन्थीलमसविरुगुनूतिर्कृष्टुतनयेऽसूदजायास्वसुर्ववतिनियमामानवयति॥ मृगमन्थलन

कमलतुविमिश्रसंस्थितोर्वाचीतयदिकदुयायत॥ ७ ॥ पूर्वधामानुषममयावडादयःकृता॥ चतुर्थ
 रावतसूर्याहसितोरुवतःकथं॥ ८ ॥ कंठकादियुक्तेषु चतुर्गृहगतेषु॥ येषुषुकिदुगुखाहाना
 द्याःकमोत॥ ९ ॥ नाकूटकृष्णायानितद्वस्यकर्कसंस्थिते॥ अर्द्धचन्द्रमुतावाधेः॥ पाकस्तन्यार्कसंस्थिते॥ १० ॥
 एकान्नगतेप्रार्थसमूहः॥ वज्रहागिते॥ विलम्बादिस्थितेध्रुवमिल्याकृतिजसंग्रह॥ ११ ॥ संख्यायागमः॥ सय
 स्र्दसंस्थेनकावाचाद्वलकीयामिनीच॥ याः॥ वयः॥ गूलया॥ गमयुगं॥ गमलध्यानायुर्वमूर्कविहाय॥ १० ॥
 ॥ अर्धविदहानिप्रताधनूचिधनकांमानीधनीचमूहालवकुहययूक॥ यंगस्थिताशनियुः॥ नलजसमुत्ते

२३

रागान्विताहुजगजावदः॥ स्वराकस्यात्॥ ११ ॥ आध्याकासु विरुत्ताकवंधयविमिश्रिता॥ अथैकस्मिन्तद्व
 नमिधः॥ स्वरुत्तप्रदा॥ १२ ॥ यद्वार्थसकसततमर्थनूचिर्गदायांतद्विदुक्कलकटजः॥ सनूजः॥ कृदानः॥ दृगाट
 नः॥ कलरुक्कद्विदुः॥ गयदिः॥ गृजाटकं॥ त्रिनसूखीकृषिकृद्गुलाख्या॥ १३ ॥ वज्रैकयुर्वसूखितः॥ गुरुः॥ गमतिगृनः॥
 सोर्ध्वान्वितायथयवसूखितयान्॥ विख्यारुकीर्णमितसोखगुलध्रुवधवायान्नसूखितसूखीनिधिकृद्गु
 ता॥ १४ ॥ त्वागमत्वानकृत्तवनेर्ध्वनचयूयाहं॥ अतिगुह्यधिकृतः॥ वदकृन्नाख्यनीचालसः॥ सूखधनेर्वि
 यूतध्वनकादधुपियेर्विनहितः॥ यूनूयांख्यकृत्॥ १५ ॥ कृत्वायूतध्वलसूखयनध्वनोजः॥ कृटेवृत्तध्वनवंध

नष्टजातः॥ ४० ॥ शत्रुवधः स्वजनसौख्यकामसौख्यं धनधनकामकृतवः प्रथमाशुसौख्यः॥ १३ ॥ अष्टद्वयः धुरग
 काकवयः प्रथमः शालयनः प्रयतिप्रतिमसुरागी॥ चक्रननचमूकः द्यूतिर्नजिताधिर्वाः शत्रुवधनिपुनः प्रिय
 गीतनुरुः॥ १४ ॥ दाताशुकार्यनिनतः यद्युयद्युदाम्निः याः धधनार्जनविहीनः सुरुह्यवंधूः कदानजः कृषि
 कः सवद्रुप्रयासः सुनः दत्ताधननूतिर्विधनधुतः॥ १५ ॥ धनविनाशिन्यायाधुनायुः गत्वथः गलक
 विधनमलिनः शानायेतः कलित्यालसाः नः॥ १६ ॥ निनिगदितायागः सार्द्धं लेनिरुनारुसाः नियतरुलदा
 धिः शक्रतयमसुदधः स्वयि॥ १७ ॥ १८२ ॥ १८ ॥ निनिगदितायागः सार्द्धं लेनिरुनारुसाः नियतरुलदा

२४

सयागः शत्रुवधः॥ ४१ ॥ अथचक्रयागः शत्रुवधः॥ ४२ ॥ अथमसमवनिष्टान्यर्ककदादिसम्पत्तिः शशीनिविनयवि
 रुक्तानधीनेयुषानि॥ अरुविनिगितचक्रस्वधिनिर्गणकवाः सुनगुनसितदृष्टविरुवाः शालयनः सुखीनः॥ १ ॥
 साम्योऽस्मन्निनिधनधधियागः ॥ २ ॥ शक्रतयमसुदधः स्वयि॥ ३ ॥ निनिगदितायागः सार्द्धं लेनिरुनारुसाः नियतरुलदा
 दीर्घायुषाविगतः शालयनः सुनगुनसितदृष्टविरुवाः शालयनः सुखीनः॥ ४ ॥ निनिगदितायागः सार्द्धं लेनिरुनारुसाः नियतरुलदा
 न्यथाशुवद्रुलिः कमदमानोस्त्वसोः कलित्यालसाः नः॥ ५ ॥ निनिगदितायागः सार्द्धं लेनिरुनारुसाः नियतरुलदा
 किप्रसिद्धानतः॥ ६ ॥ निनिगदितायागः सार्द्धं लेनिरुनारुसाः नियतरुलदा

नीतनिवृत्तिः यन्न नानातिः ॥ ७ ॥ स्वयमभिगतविरुः पार्थिवस्तुमावाहवतिहि सुनरुथाधीधनस्याति
 मांश्च ॥ प्रउन्नगदहानीनः ॥ ८ ॥ लवान्यातकीर्ति विषयसूखसूखानुर्वतिश्च नरुथा ॥ ९ ॥ उन्नगसूख
 उन्नगवाहताश्चस्माभनिताइन्धूनाप्रवृत्तः ॥ १० ॥ सुखसूखकमदुत्तमलितः ॥ ११ ॥ सितनीचनिः ॥ १२ ॥ प्रवृत्तः ॥ १३ ॥ स्वलोच
 नृयतत्रयिर्वहजाता ॥ १४ ॥ उन्नगसूखधनसूखसूखानुर्वतिश्च नरुथा ॥ १५ ॥ उन्नगसूखधनसूखसूखानुर्वतिश्च नरुथा ॥ १६ ॥
 धर्मसूखसूखधनसूखसूखानुर्वतिश्च नरुथा ॥ १७ ॥ उन्नगसूखधनसूखसूखानुर्वतिश्च नरुथा ॥ १८ ॥ उन्नगसूखधनसूखसूखानुर्वतिश्च नरुथा ॥ १९ ॥
 वहुकार्यकृत् ॥ २० ॥ अष्टादश ॥ २१ ॥ अष्टादश ॥ २२ ॥ अष्टादश ॥ २३ ॥ अष्टादश ॥ २४ ॥ अष्टादश ॥ २५ ॥ अष्टादश ॥ २६ ॥ अष्टादश ॥ २७ ॥ अष्टादश ॥ २८ ॥ अष्टादश ॥ २९ ॥ अष्टादश ॥ ३० ॥

२५

मानसं कासोम्यग्रुन्नयवयायगतेर्वलस्ये ॥ ३१ ॥ दान्यांसममाल्यवसूमांश्च नृनतायामन्यसूमायिरुलसि
 दमूकैर्गता ॥ ३२ ॥ २०१ ॥ ३३ ॥ तिष्ठातिमदवनितावार्यवर्षावनामिहिनवित्रवित्रहृत्तातकवद्वयाग
 ध्यायगुथायम ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ अष्टादश ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ तिष्ठातिमदवनितावार्यवर्षावनामिहिनवित्रवित्रहृत्तातकवद्वयाग
 रं वृधननियुधधीकीर्तियोद्यानितां कृत्वास्मिन्नाकार्यनिनगंधुकलत्रमायुषेलवृत्तं विनैजनेध्वनक
 णलं लुप्तयुक्तानुवा ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ कृत्वास्मिन्नाकार्यनिनगंधुकलत्रमायुषेलवृत्तं विनैजनेध्वनक
 युधसौराग्यकीर्तियोद्यानितां विकारं कलमुखामस्मिन्नमतिविरुध्वनसागिनावस्मान्ससितः कयासूकलव

सार्कियुतर्हसंगं॥ २ ॥ मूलादिभूतकूटेश्वरवृत्तिवर्तिग्यादुयाद्यासमाख्ये धर्मध्वजः॥ यजीवतु वृत्तिनयतिः
 पाकविलादिजावा॥ गमयामन्नाथदक्षः॥ यत्रयुवति नलीश्वरकृत्तास नमः॥ स्वार्कसम्यसं॥ सप्तविरुत
 नयकृमिऊनिदितध्वा॥ ३ ॥ सोम्यं नमः॥ यत्रयुवति नलीश्वरकृत्तास नमः॥ स्वार्कसम्यसं॥ सप्तविरुत
 मायायदुर्लभकः॥ सद्यः॥ यत्रयुवति नलीश्वरकृत्तास नमः॥ स्वार्कसम्यसं॥ सप्तविरुत
 नायिवा॥ ७ ॥ अस्मिन्सितसमागमल्ये चक्रयवृत्तिममाधयस्यचक्रदिविरुः॥ तववृत्तिवलिचिपूकचिपूव
 कथितरुले॥ यात्रयवृत्तिकल्या॥ ८ ॥ २०६ ॥ निधीधीमदवकिताचार्यवर्यधीवनाहमिहिनविमंति

२३

तदुर्जातकदिग्रयामाधयवृत्तिमः॥ अधूनायवृत्त्यायागध्याय॥ ॥ एकस्मिन्नुनादिरिवलयूते
 जातयुथम्याय॥ गी॥ अजीविकरिद्वृत्तिप्रकाशनिर्मन्वन्नागना॥ मारुयकृत्तुन्याकनसितप्रासाक
 नीने॥ कमन्यवृत्त्यावलिहि॥ मया॥ यत्रयुवति नलीश्वरकृत्तास नमः॥ स्वार्कसम्यसं॥ सप्तविरुत
 रुकथानना॥ अरिजात्रिमागदीक्षितानिरुनेनयनिनीक्षितेनयि॥ २ ॥ ऊम॥ धन्येयदृष्टार्कयुगंयध्वाः
 लार्किऊमयंयवलानीदीक्षायाप्रार्थार्किडेकासंस्तेरोमार्क॥ सोप्रदृष्टववृत्त्या॥ ३ ॥ सप्तयुनृहलिरानास्वाः
 क्रिदृष्टासूधमगुनृनृयमीनायागऊमृथदृष्टात्॥ नवमरुवनसंस्तेमन्यगन्येनदृष्टवृत्तिनययथा॥ ग

27

धूर्तुश्चतुर्भुजः ॥ ८ ॥ वक्रहस्तधनरागी सुनयिगुरुकाशमयिगु। प्रियवाग्दामाद्यतिमानदना नृपवका
 लाय ॥ ९ ॥ सुलभाविद्यायधनरागी सुखसायितीरुनुयां। उत्साहीधृष्टः कानथाद्युगीचतस्कत्रादुक्तः ॥ १० ॥
 विगम्यत्रमात्यधनः सुलाचनान्ध्रवतिविगयां। दानकावतिकरुखालूः प्रियवाग्धर्माधिराष्ट्रानो ॥ ११ ॥
 ॐ र्यलुङ्गायतिमानवचनयटः कलरुद्धिष्टासु। आशाविदसवागिद्धालूचनानृपाधसु ॥ १२ ॥ अष्टासु
 वक्रमिगुः संपुष्टाधर्मकल्पचूकायः। मूलमानीधनवानसुखिनर्दिप्रः सिन्धुवागी ॥ १३ ॥ ॐ शानन्दकल
 गामानीदृष्टोदयधुजलदवः। वेद्यविनिर्गन्धकवक्रमिगुः कलरुगुरुगध ॥ १४ ॥ धीमान्धवहप्रतव

नृदा नृदा नाधना निगः ख्यातः। दागाद्यः धूनागीतः प्रियाधनिष्ठासूधनलुचः॥ १२॥ सुटवाग्नासनीनियूला
 साहसिकः तरिषकः इयः अः॥ रुदयदासूदिनः कृविजितः यद्वदातात्रः॥ १३॥ वकासूखीप्रजावानजित
 गकुडामिकादिगीयासू। संपूर्णः धूरुगः धूनधुविनर्थवानयोः॥ १४॥ नदगजातर्कः॥ ॥ रुकाग
 सुदगुमुष्णकलधुतुकदिप्रप्रभायः नः कामीद्वलजा नृरस्त्रिधनः धूनागना वल्लरः सवाहूः कनस्त्रीव
 लार्किर्गतिनामानी सहात्म्यः अः॥ कृयागिगलदितातिलः सायचरी नूः कथः॥ १५॥ कान्कः खलगतिः धूधूनव
 दनः यः सायार्धदितः स्यागीकृषः सः यः कृदवान्कथाप्रजः॥ धूधूनवः॥ धूधूनवः॥ धूधूनवः॥

२८

नः सोलाग्रयूकः कमीदीकामिः प्रमर्कप्रियः स्त्रिः नमदत्तमध्वा नसोम्यस्थगविः॥ १६॥ कृलालः सनगायः
 वानकृषालसाप्रकृषाः सुविद्वतः कृषिः नमूर्धजः यद्वमतिर्कस्यदितधूगवितः। वावुः प्रियवाकुरुकृष
 नृत्रिगातप्रिया नृरुवित्क्रीवेर्योतिसमूत्रननसध्वरुतीयर्कगः॥ १७॥ आवकृदेगतः समूत्रनकठिः कृः
 निर्जितः ससूददेवरुः प्रनृनालयः कथधनेः संपूर्णः ननवद्वरुः। कृषः यीनगलः समतिववहासाम्नासू
 दत्तमलकोयायाननयः सवधमसहिगजागः॥ कृषः कनः॥ १८॥ तीक्ष्णः सुलरुनृविष्णालवदनः र्यः ग
 कृषः स्यात्तमजः कृषः यीप्रियमांसकानननगः कृषः स्यात्कार्यविर्नः॥ कृषः स्यात्तमजः कृषः स्यात्कार्यविर्नः॥

स्थागवानविकान १६ विप्रधी १६ सुगर्वितमनामाहुर्विधयार्क ॥ १९ ॥ वीरामनूनवावृवीकलमति १६ मु
 सांनवाड १६ सुखीधक १६ सखनगकलासुनियु १६ ॥ म्नाथविद्वार्मिक १॥ मधावीसुनतिप्रिय १६ यमगुरु वि
 रुधसंयु १६ कन्यायांय नद १६ गप्रियवचा १६ कन्याप्रजात्यात्म ॥ २० ॥ दववाकलसाधुयु १६ ननग १६ या
 रु १६ वि १६ मुजित १६ याहु १६ सुनननासिक १६ कलवलजागटनाथनिग १६ हीनांग १६ कयविक्रय १६ सुकलालाद
 वदिनामासुनक वंधूनामयकात्रकदितविर १६ सुकधने १६ सुकम ॥ २१ ॥ यथूलनयनवका १६ रु १६ यानु १६
 नूननकगुनू वियूक १६ १६ वयाधिरथ १६ ननयानिकलयुधयिल १६ कनवध १६ मयकलिल १६ सगाक १६ नया

२२

थालिजा १॥ २२ ॥ आदार्था १६ विनाधन १६ पिरुधन १६ स्थागाकविर्वीर्यवानवका १६ मूलनय १६ धवाधनन १६
 कर्माद्यत १६ हित्यविर १६ कर्कांग १६ कनखीसमांसल १६ उ १६ यागल्लावानधर्मविद्वधुदियवलात्तामगितव १६
 सामेवसा १६ १६ ॥ २३ ॥ निर्यलालयनिस्रदा नत नयधर्मधजाध १६ १६ स्वदकामकटिगृहीतवचन १६
 सोराग्ययूकाल १६ १६ हीतालूमनूजाटनधमकात्रसलाधिक १६ धिक १६ कायकल्लुवागम्य १६ नंगनासानेनग १६
 सखकलजाद्यु १॥ २४ ॥ कनरुगल १६ गिनालखननामेरुदीर्घननूपृथुवन १६ नूपृथुवन १६ यनाथकटिर्व ०
 न १६ यनवनितार्थयायनिनग १६ कय १६ द्वियुत १६ ययक १६ समानूलयनसुदत्त १६ यटजाधिस १६ ॥ २५ ॥ जनवन

नरकाकावासदानानूनकः समनूचिनहनीनमुंगनासावृत्कः ॥ अरिहवतिसतिसयत्ताननकीडितश्चावृत्
 शिर्द्धतिनिधिधनरागीयष्टितश्चावृत्तनालो ॥ २४ ॥ वलवतिनालो तदप्रियतोवस्ववलनूतः ॥ स्याद्यदि हि
 माधुः ॥ कथितरुत्तानामविकलदाता ॥ हविर्वदता न्ययनूयनिविन्धा ॥ २५ ॥ ॥ इति वदनालिस्वरावा ॥ ॥
 प्रतिताश्चनारधनाल्यविरुः ॥ क्रियगत्तायूधरुद्विहुंगला ॥ गविर्वमुसूगन्धयधजीवीवनितादिह
 कृहालः ॥ सगायवा ॥ २६ ॥ विद्यायागिषविरुवानमिधूनरानीकूलीनस्मिन्तीकूस्वयनकार्यद्वक्तु
 यधिकलोधर्मयूयता ॥ सिंरुस्ववनलोत्तगकूलनेतिविद्यानिता ॥ २७ ॥ यमानकन्यास्कुलिपिलस्वर्कय

[illegible]

स्वर्कमाधुलिकानप्रचयविवश्चनयतिर्वाधनी कृष्णकूर्कटवल्कलामकननीयानि रुक्षस्वी ॥ ४० ॥
 ॐ तिगुननागिस्वरवा ॥ यत्रयतिवत्रस्यदर्थवायेद्वदविरुक्तायांन०क०क० ॥ स्ववलमध्यध
 नानप्रचयूय०स्वजनविउ०यतिगारुय०सिगस्या ॥ ४१ ॥ नृयकृत्त्यकनार्थवानकालावितमिथूनमष्टतति
 नीचकर्मानविउ०गर्ममनात्रियूयसूरुग०कुविजिगाकनार्थ ॥ ३२ ॥ द्विरुयार्थलीन०यवलमद०क
 यगिगिरुहोयायार्थक०यवनयवतिमर्चननय०गले०यूय०सस्वमुनरितानवनयुनोमयविद्वाना
 धानृयजनिगयूयानिसूरुग० ॥ ३३ ॥ ॐ तिगुननागिस्वरवा ॥ ॥ मूर्खाटनकयटवान्विसद्वयमज

३२

कीटवचनधराकयलायुलध्वनिजिसुखार्थनय०स्वलितयलस्य नकायतिरुवतिमूययतिध्ववा
 ॥ ३४ ॥ वयस्कीक्षानवकुविरुवारुनिराशार्थयमुखा०स्वाच्चगलयनवलग्रामयूयार्थवांशु
 ककि०ध्वविक्लदहनामारुहीनामृता०सि०नार्थविसुखनयविष्टि०सूर्ययूय ॥ ३५ ॥ स्वक०य
 ययितानप्रचयूयनययूयजायाधनाजीवकृगमर्कजयूयवलग्रामाग्रनताथवा०अन्यकृधनसर्व
 न०यूयवलग्रामाग्रलीमन्दकस्वकृगमलिन०सि०नार्थविरुवारुकावजान०यमान ॥ ३६ ॥ ॐ तिगने
 ध्वननागिस्वरवा ॥ ॥ गिगिनेकनसमागनकृक्षानांसद०रुहप्रवादकिलयातीरुलमभिकमिदय

33

[illegible]

38

[illegible]

नराग्रमस्ति तदा गोनिः यस्मिन्मयेति धर्मधनधीशोऽर्थगः कर्मगः स्वागतावगुणान्वितार्जनगतः
 दुर्भागोऽतीताश्रया ॥ ४ ॥ ॥ इति त्रयुवानः ॥ ॥ लामकडकतानेर्द्धनगकनाधर्मधवान् दिनकवपति
 तान्नायंस्कः ॥ विद्वद्वनिप्रखलतयतिमंगुणकुधर्मरुविश्वतगुणधनगावगार्कवतः ॥ ५ ॥ विद्वान्
 सवाक्कः कथयः सुखी सधीमाः गुरुः चिरुतामिकथः ॥ नीतकथसीसधनः सत्ताहः खलेऽजीवकमः ॥
 विलम्बता ॥ १ ॥ जीववानः ॥ स्मरनियूनः सखवांश्च विलम्बयकलरागतसूत्रनयनयगत
 स्मरिताहगुयूगुगुवतामिषगडविनीत्याह ॥ ६ ॥ ॥ इति रुयुवानः ॥ ॥ अदृष्टार्थनामीमदनवसम्भ

३५

लकमलिनः शिष्टुत्वपीठार्कः यविरुसूतविलम्बयलसवाकागुनस्वाकावस्कृत्यनिसदृष्टाग्रमयून
 यः सविद्वार्थार्थगदिनकवसमान्यकथितः ॥ ७ ॥ ॥ इति त्रयुवानः ॥ ॥ समुपचयवियलीसोम्यायाधवूमसः
 कथयति यनीतानि सः सखसूतमयः ॥ १० ॥ ॥ उच्चरिकाः ससूतकृगनीवगृहार्कः ॥ ११ ॥ ॥ इति त्रयुवानः ॥ ॥
 यादाल्यनिसूतः ॥ ११ ॥ ॥ इति धीशमदवकि कायार्थवृथगावगारुमित्रविमित्रविरुद्धार्कः कलावाधायः ॥ अ
 दृष्टमः ॥ ॥ अथ अदृष्टयागः ॥ ॥ कलसमकलरवधूयूकाधनिसूतिकागितृयाः सखकृष्ट्यायः ॥ अ
 विरुवसूतसूतवधयायागलयवलेनृयाधमिगः ॥ १२ ॥ ॥ अथ अदृष्टयागः ॥ ॥ अथ अदृष्टयागः ॥ ॥ अथ अदृष्टयागः ॥

मर्तमिदुआगमञ्चसिद्धिः॥विवस्विसस्वमूरुद्याधितावधतकावधद्वितसमताः॥१॥निमर्कगवू॥ २ ॥
 नकमूलगंधुहमाहयस्यानरागरुदोद्यवनावदकि।कस्यांसरुदोनथस्तिन।नतिप्रसंगस्तिविषयुक्त
 ॥ ३ ॥यामस्यसस्वसमरुयदिनहाहानांस्यातामरायमवतार्थयतागितजा।वाद्यीयुतयुक्तिमादवकोक्ति
 स्वासोराग्यधीमधूनवाक्ययुक्तप्रजातः॥ ४ ॥तास्ववहावास्वयवर्द्ध।सूरुयाननापूर्वगु।सूमध्या॥व्यस्य
 हानारुवनस्तिगमस्यारुवस्यकगु।विहीना॥ ५ ॥कल्याणनृपगुणमात्मसूदृका।वन्द्यानृगसुदवि
 नाथगुणकनोति।यालायतायुधचतुनक्षत्रगुणमूर्तिरिंसुगुनतल्यगर्तनध्व॥ ६ ॥गनाकाकायधिता

३६

ज्ञाननन्दःकीवःधूनाष्टिद्वदामहृदि॥याथाहिंश्राधीध्ववगारुमांहा।श्वसामीषवाहितद्वादहर्हो॥ १ ॥
 ज्ञानान्वितावलविरुषसस्वयुक्तगजगिरिसाहययुक्तसुकुञ्जस्वरा।गानागीमृतस्वयवतिविषमान्यद
 नाइस्वीयनिष्ठदयगामलिमार्कयुग॥ ८ ॥स्वांहागुनीयगःसखवृद्धियुक्तास्तुस्त्रियुयनिनृगुयम
 रागवन्दः॥मधकलाकयठकाद्यविवाहिल्य।भक्तार्थसाहसयुगा॥हाहीउनिमान्य॥ २ ॥स्वर्गिंहाहा
 वेदुसगसखावाग्यराथार्थयुयःधुकनीकू॥सूतलितवयू॥सूयकीर्तुन्द्रियध्व॥धूनसुवौविषमवधको
 सहुषाशोसूखीहोवाव।अशोत्रविहाणियुगवात्रपूर्वाहाकयू॥ १० ॥२८३॥हृदिग्रीष्मीमयवन्किकावाय

37

दिनकत्रविमोप्रवक्ष्यकालगुणरुगुजोरवनस्यमध्यातो॥ नविसुतक्षिमावागनस्य॥ ४६॥ क्षीतनय
लदसुसर्वकाल॥ ७॥ २२२॥ ॥ तिथीध्रीमदवकिकाचार्यवर्यधीवनाहमिहिनविनविनचिंतकुरुजातक
यकीधुध्यायविहगितम॥ ॥ अथनिष्ठाध्याय॥ ॥ लग्नस्युक्तकलुगुरुधुरयमिषाकथवालाः
किंतवद्यादायदिसस्यदकिहिनयाह्यानयथासकुरुव॥ यार्थनादयगनवोवविसुतामीस्तितादानह
युगस्मानगतधुगमनर्षयुगावनयकृति॥ १॥ ३७॥ ग्रह॥ सितवकुवधसंस्तिममधस्तिरुगुतन
याथवाग्रयमीशग्रहवसिहितसंनिवीक्षितजायावधदहनयिवागया॥ २॥ लग्नद्यायानिगत

याः ४६ गिनिग्न नः ४६ यत्नाय रुकनय नस्य वदंति ऊन ॥ १ ॥ अनस्य नवमय के मयं स्योर्वा शुक्रार्क्या
 विक्लुदा नवद निजात ॥ ३ ॥ काः ६६ दयलु गुत नय स्रव क्रमं धी वंध्या यनिर्यदि नस्य तर्क मिष्टयूकं ॥
 याये गुरु यय मय लग्रस्य ४६ की ६६ गिन्यस्य कल गऊ नम्री ॥ ४ ॥ अणि

आशा अरुकाधि

1.601

ASHA ARCHIVES